आरती श्री ब्रजनन्दन की

करत आरती नवब्रजनारी ।

अगर कपूर सुगंधित बूका,
विविध भांतिकी सौंझ संवारी।

घंटा झालर शंख नृसिंहा,
बिजे घंट धुनि परम सुखारी ।

वंशी बीन मृदंग तंबूरा,
सहनाई बाजत है न्यारी ।

बरसत फूल गगनसों सुरगन,
देववधू नाचत दे तारी ।

हरषत सखी करत न्यौछावर,
नारायण होवै बलिहारी ।

विवरण

सुगन्धित अगरबत्ती एवं कर्पूर से ब्रज की नयी-नवेली औरतें ब्रजनन्दन का आरती कर रही हैं, अनेक प्रकार की इनकी झाँकी सवारी जा रही है, झालर लग रहें हैं, शंख, नृसिंहा (एक प्रकार का बजाने वाला बाजा) एवं घंटे की ध्वनि सबके मन को परम सुख पहुँचा रही है ।

वंशी, बीन, मृदंग, तंबूरा एवं शहनाई बढ़े ही प्यारे ढंग से बज रही है । आकाश से देवता फूलों की वर्षा कर रहें हैं एवं देवताओं की वधुएँ ताली बजा रही हैं । ब्रजनन्दन की सखी लोग आनन्दित मन से उनपे न्योछावर हुई जा रही हैं तथा इन ब्रजनन्दन नारायण पे बलिहारी होती जा रही हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.